कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 03 भाग 12, (मई, 2024)
पृष्ठ संख्या 26–28

भारत में आम का क्षेत्रफल एवं उत्पादन तथा प्रमुख समस्यायें

भरत लाल मीना[1,2] एवं सुहैल अहमद खान[1]

[1]कृषि विभाग, इंटीग्रल इंस्टीट्यूट ऑफ एग्रीकल्चरल साइंस एंड टेक्नोलॉजी (IIAST), इंटीग्रल विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत
[2]वै.औ. अ.प. – राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत।

Email Id: –sanupam554@gmail.com

आम (*मैंगीफेरा इंडिका एल.*) महत्वपूर्ण पोषण तथा आर्थिक महत्व का एक उष्णकटिबंधीय फल है। इसकी खेती दुनिया भर के उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में व्यापक रूप से की जाती है, जिसमें भारत सबसे बड़ा उत्पादक है। आम अपने स्वादिष्ट स्वाद, सुगंध और आकर्षक रंगों के लिए जाना जाता है, जो इसे उपभोक्ताओं के बीच एक लोकप्रिय फल बनाता है।

पोषण की दृष्टि से, आम विटामिन, खनिज और एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर है, जो कई स्वास्थ्य लाभ प्रदान करता है। यह विटामिन सी, विटामिन ए और आहार फाइबर का एक अच्छा स्रोत है, जो स्वास्थ्य को बनाए रखने और विभिन्न बीमारियों की रोकथाम के लिए आवश्यक हैं।

आर्थिक रूप से, आम की खेती लाखों छोटे किसानों के लिए आय का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। फल को न केवल ताजा खाया जाता है, बल्कि जूस, जैम और सूखे स्लाइस जैसे विभिन्न उत्पादों में भी संसाधित किया जाता है, जिससे आम उद्योग का मूल्य बढ़ जाता है।

भारत दुनिया में आम के सबसे बड़े उत्पादकों में से एक है, इसकी कृषि भूमि का एक महत्वपूर्ण हिस्सा आम की खेती में उपयोग होता है। मौसम की स्थिति, कीटों के प्रकोप और बाजार की मांग जैसे कारकों के कारण आम की खेती का सटीक उत्पादन और क्षेत्र साल–दर–साल भिन्न होता है।

भारत में आम की खेती का क्षेत्रफल लगभग 2.3 मिलियन हेक्टेयर है। उत्तर प्रदेश, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, बिहार और गुजरात आम उत्पादन में अग्रणी राज्यों में से हैं, जिनमें से प्रत्येक में आम की खेती के तहत पर्याप्त क्षेत्र है।

प्रमुख किस्में

भारत में आम की कई किस्मों का उत्पादन कीया जाता है, इनमे से प्रमुख किस्मे बॉम्बे ग्रीन, चौसा, फजली, गुलाबखास, किशनभोग, हिमसागर, जर्दालू और लंगड़ा, केसर, अल्फांसो, राजापुरी, जमादार, तोतापुरी, नीलम, दशहरी और लंगड़ा, बंगनपल्ली, पैरी, मालदा और मुलगोआ है ।

भारत में आम का क्षेत्रफल एवं उत्पादन

आम का क्षेत्रफल प्रत्येक वर्ष बढ रहा है, वर्ष 2018 – 19 में 2296 हेक्टेयर से बढकर वर्ष 2022–23 में 2332.20 हेक्टेयर हो गया है ।

क्षेत्रफल('000' हेक्टेयर) उत्पादन ('000' मिलियन टन)

क्रम संख्या	वर्ष	क्षेत्रफल('000' हेक्टेयर)	उत्पादन ('000' मिलियन टन)
1	2022-23	2332.20	20988.36
2	2021-22	2350	20772
3	2020-21	2317	20386
4	2019-20	2281	20265
5	2018-19	2296	21378

स्रोतः कृषि एवं किसान कल्याण विभाग

आम निर्यात

भारतीय आम स्वादिष्ट तथा सर्वोत्तम गुणवत्ता के कारण देश एवं विदेशों में लोकप्रिय हैं। इन आमों की विदेशों में बहुत मांग है, बॉम्बे ग्रीन, चौसा, लंगड़ा, केसर, अल्फांसो, नीलम, दशहरी और लंगड़ा, बंगनपल्ली आदि आम यहाँ से निर्यात किये जाते है । निचे तालिका में वर्ष 2020–21 से 2022–23 तक निर्यात के आकंडे दर्शाया गया हैं:

वर्ष 2020-21 से 2022-23 तक निर्यात		
वर्ष	आम की मात्रा (मिलियन टन)	रु. (लाख)
2020-21	21,033.58	27,187.83
2021-22	27,872.77	32,745.12
2022-23	22,963.78	37,849.37

स्रोतः एपीडा

प्रमुख आयातक देश : संयुक्त अरब अमीरात, ग्रेटब्रिटेन, कतर, कुवैत, ओमान, कनाडा, सिंगापुर, बहरीन, सऊदी अरब, नेपाल आदि में भारत से आम का निर्यात किया जाता है ।

प्रमुख समस्याएं:

जलवायु परिवर्तनः जलवायु महत्वपूर्ण कारक है, आम के पेड़ तापमान और वर्षा में बदलाव के प्रति संवेदनशील होते हैं। जलवायु परिवर्तन फूल आने, फल लगने और समग्र उपज को प्रभावित करता है। अनावश्यक वर्षा तथा आंधी–तूफान, सर्दियों में अधिक कोहरा आदि से आम का उत्पादन कम हो जाता है ।

कीट और बीमारियाँः आम के पेड़ विभिन्न कीटों और बीमारियों के प्रति संवेदनशील होते हैं, जिनमें मैंगो फ्रूट फ्लाई, मैंगो हॉपर, एन्थ्रेक्नोज और पाउडरी फफूंदी शामिल हैं। कीट और बीमारियाँ की वजह से फल की गुणवत्ता और उपज कम हो जाती है।

कटाई–तुड़ाई के समय नुकसानः आज भी आधुनिक उपकरण उपलब्ध नहीं होने के कारण किसान पुरानी तकनीक एवं परम्परागत तरीके से ही आम की तुड़ाई–कटाई करते हैं, जिससें लगभग 10–15% तक का नुकसान हो जाता है। इसके अलावा अनुचित रखरखाव, भंडारण और परिवहन में भी 5–10% तक का नुकसान होता है। आम जल्दी खराब होने वाले फल हैं और गुणवत्ता बनाए रखने के लिए इन्हें सावधानी से संभालने की जरूरत होती है।

पुराने बाग तथा कटाई – छांटईः किसानों के पास आम के काफी पुराने दृपुराने बाग लगे हुई है तथा आम के पेड़ों की कटाई दृ छांटई नहीं होने के कारण आम उत्पादन कम होता जा रहा है तथा उत्पाद की गुणवत्ता में कमी आ रही हैं।

भूमि क्षरण तथा जल प्रबंधनः मृदा क्षरण, लवणीकरण और भूमि क्षरण के अन्य रूप समय के साथ आम के बागों की उत्पादकता को कम करते हैं। आम के पेड़ों को नियमित रूप से पानी देने की आवश्यकता होती है, खासकर फूल आने और फल लगने के दौरान। पानी की कमी या

अकुशल सिंचाई पद्धतियाँ उत्पादन को प्रभावित करती हैं।

बाजार पहुंच तथा अनियमित बाजारः बुनियादी ढाँचे और बाजार की जानकारी की कमी भी चुनौतियाँ होती हैं। घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय बाजारों तक पहुँच, आम उत्पादकों के लिए एक महत्वपूर्ण समस्या है, विशेषकर दूरदराज या ग्रामीण क्षेत्रों में। बाजार पहुंच में सुधार के लिए बुनियादी ढांचे और वितरण नेटवर्क में निवेश तथा सुधार करने की आवश्यकता है।

कुशल श्रम/मजदूर की कमीः आम को कीट तथा बिमारियों से बाचने, अच्छी गुणवत्ता तथा अधिक उपज के लिए कीटनाशकों तथा जैव उर्वरक का छिडकाव करने तथा कटाई – छांटई करने के लिए कुशल मजदूर/श्रम की कमी तथा उच्च श्रम लागत एक मुख्य समस्या हैं।

कीमत में उतार–चढ़ावः आम मौसमी फल होने के कारण इसकी कीमतों में उतार–चढ़ाव होता रहता हैं जिसका मुख्य कारण मौसम की स्थिति, आपूर्ति और मांग और बाजार के रुझान जैसे विभिन्न कारक है। इससे आम उत्पादकों की लाभप्रदता तथा आपूर्ति प्रभावित होती है।

निर्यात नियमः आम उत्पादक जो अपने उत्पादों का निर्यात करना चाहते हैं, उनके लिए आयातक देशों द्वारा बनाये गये निर्यात नियम और प्रतिबंध आम उत्पादकों के लिए प्रमुख समस्या हैं, जिसके कारण किसान अपना उत्पाद निर्यात नहीं कर पाते हैं।

निष्कर्ष :

आम की खेती कृषि और खाद्य सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, इसका व्यवसाय लाखों लोगों को आजीविका, रोजगार और दुनिया भर के उपभोक्ताओं को पौष्टिक फल प्रदान कर रहा है।

यह अपने स्वादिष्ट स्वाद, आकर्षक रंग और समृद्ध पोषण के लिए प्रसिद्ध है। यह दुनिया भर में अत्यधिक आर्थिक, पोषण संबंधी और सांस्कृतिक महत्व रखता है।

आर्थिक रूप से, आम की खेती कई किसानों के लिए आय का एक प्रमुख स्रोत है, खासकर उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में। फल को न केवल ताजा खाया जाता है बल्कि विभिन्न उत्पादों में संसाधित भी किया जाता है, जो कृषि अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

आम के ताजा फल, आमरस तथा ज्यूस के अलावा इसका व्यावसायिक महत्व भी है जैसे आम का आचार, मुरब्बा, आम पपरी, जेली, ज्यूस, चिप्स, जेम तथा आम नेक्टर आदि में उपयोग किया जाता है । भारतीय आमों की विदेशों में काफी मांग हैं, जिसके कारण कई देशों में यहाँ से आम निर्यात किये जाते हैं जिससे किसानों को उनके उत्पाद की अच्छी कीमत तथा आम व्यापारियों को अच्छा मुनाफा मिल रहा हैं। वर्ष 2020–21 में 21,033.58 मिलियन टन आम का निर्यात किया गया था, जो अब वर्ष 2022–23 में बढ़कर 22,963.78 मिलियन टन हो गया जिसकी कीमत 37,849.37 लाख है, प्रतिवर्ष आम आम का निर्यात बढ़ता ही जा रहा हैं।

सरकार के द्वारा भी आम का उत्पादन बढानें तथा अच्छी गुणवता के आम के लिए समय–समय पर किसान संगोष्ठी, आम विपणन की सुविधा एवं निर्यात से समन्धित जानकारी किसानों को उपलब्ध करवाई जा रही हैं।